0093

माध्यमिक शिक्षा मण्डल, मध्यप्रदेश, भोपाल

मु.उ.पु. 32 पृष्ठ

कार्यालयीन उपयोग के लिए

परीक्षा के नाम की सील: हा. से. स्कूल सर्टि. परीक्षा

केन्द्र क्रमांक की सील
681009

निम्न रिक्तियों की सही प्रविष्टि परीक्षार्थी द्वारा की जाए।

1. विषय कोड 0 0 1 परीक्षा का विषय हिन्दी
2. परीक्षा का माध्यम हिन्दी परीक्षा की दिनांक 3.3.09
3. परीक्षार्थी प्रश्न पत्र का पूर्ण कोड नम्बर (सेट A, B, C, या D) अनिवार्यतः भरें — कोड: U-2001 — सेट: D

[redacted] के निशान से मिलाकर लगायें

[redacted] 004978

परीक्षार्थी का अनुक्रमांक (अंग्रेजी अंकों में)

2	9	6	8	1	6	2	5	4

नीचे दिये प्रत्येक कालम में ऊपर दिये गये अनुक्रमांक के अंकों को उसी क्रम में शब्दों में लिखा जाए :-

दो	नौ	छः	आठ	एक	छः	दो	पाँच	चार

पर्यवेक्षक / केन्द्राध्यक्ष का प्रमाणीकरण

प्रमाणित किया जाता है कि परीक्षार्थी द्वारा निम्नानुसार पूरक उत्तरपुस्तिका ली गई है :-

क :- संख्या शब्दों में एक अंकों में 1

ख :- परीक्षार्थी की बैठक व्यवस्था कक्ष क्रमांक 3 में है।

ग :- उत्तर पुस्तिका पर प्रश्न-पत्र का कोड नम्बर एवं सेट सही लिखा है।

हस्ताक्षर (पर्यवेक्षक) ---[signature]---

नाम दिलीपशर्मा पद सहा. अध्या.

पता/संस्था शा. उ. मा. शा. ...

परीक्षार्थी द्वारा ली गई सभी पूरक उत्तर पुस्तिकायें, मुख्य उत्तर पुस्तिका के साथ संलग्न हैं।

हस्ताक्षर केन्द्राध्यक्ष

BSEMP

प्रश्न	
1	
2	
3	
4	
5	
6	
7	
8	
9	
10	
कुल प्राप्त	

परीक्षार्थी, परीक्षक से अपेक्षा है कि वे पृष्ठ भाग पर दिये गये निर्देशों का यथेष्ट पालन सुनिश्चित करेंगे।

प्रमाणित किया जाता है कि उपरोक्तानुसार संलग्न पूरक उत्तर पुस्तिकाओं की संख्या मूल्यांकन के समय सही पाई गई है। हालाक्राफ्ट स्टीकर चस्पा स्थिति में यथावत् रखते हुए ही उत्तरपुस्तिका का मूल्यांकन किया गया है। मैंने सभी प्रश्नों के उत्तरों का गहन मूल्यांकन किया है। उत्तर पुस्तिका के अन्दर के अंक एवं कव्हर पृष्ठ पर दर्शाये अंक एक समान है एवं योग पूर्णतः सही है।

हस्ताक्षर (परीक्षक) [signature] — हस्ताक्षर (उपमुख्य परीक्षक) — हस्ताक्षर (मुख्य परीक्षक)

परीक्षक क्रमांक 9340009 — दिनांक.................. — दिनांक..................

परीक्षार्थी के लिए निर्देश

1. परीक्षार्थी को अपना अनुक्रमांक / विषय / माध्यम / दिनांक एवं प्रश्न–पत्र का कोड (समूह) मुख पृष्ठ पर अंकित करना अनिवार्य है। अन्यत्र कहीं भी नहीं लिखा जाएगा।
2. अनुक्रमांक नीचे दिये गए उदाहरण अनुसार लिखा जाए :–

1	8	2	4	3	9	5	6	8
एक	आठ	दो	चार	तीन	नौ	पाँच	छः	आठ

3. उत्तर पुस्तिका के दोनों ओर पृष्ठों में लिखें। बीच में रिक्त स्थान न छोड़ें। भूल से छूटा / रिक्त स्थान तथा शेष खाली पृष्ठों को क्रास किया जाए।
4. परीक्षार्थी प्रश्न पत्र हल करते समय ही, कव्हर पृष्ठ पर दी गई तालिका में प्रश्न क्रमांक के सम्मुख वाले कालम में उत्तरपुस्तिका का वह पृष्ठ क्रमांक अनिवार्य रूप से अंकित करें जिस पर प्रश्न का उत्तर लिखा गया है। यदि पूरक उत्तरपुस्तिका का उपयोग किया गया हो, तो उस पर 33 से प्रारंभ करते हुए पृष्ठ क्रमांक परीक्षार्थी द्वारा स्वयं डाले जाएँ।

परीक्षक के लिए निर्देश

1. केवल उन्हीं उत्तरपुस्तिकाओं का मूल्यांकन करें जिन पर होलो क्राफ्ट स्टीकर चस्पा है।
2. उत्तरपुस्तिका का मूल्यांकन होलो क्राफ्ट स्टीकर को चस्पा स्थिति में यथावत् रखते हुए ही किया जाये।
3. बिना होलो क्राफ्ट स्टीकर वाली तथा फटे हुए होलो क्राफ्ट स्टीकर वाली सभी उत्तरपुस्तिकाऐं मूल्यांकन हेतु परीक्षा नियंत्रक, माध्यमिक शिक्षा मण्डल, मध्यप्रदेश, भोपाल को व्यक्तिशः रूप से भेजी जाये।

मूल्यांकन केन्द्र के लिए निर्देश

1. **O.M.R. SHEET** पर प्राप्तांक की प्रविष्टि करने हेतु केवल वही उत्तरपुस्तिकाएँ प्राप्त करें, जिनका मूल्यांकन होलो क्राफ्ट स्टीकर को चस्पा स्थिति में यथावत् रखते हुए ही किया गया है। यदि होलो क्राफ्ट स्टीकर फटा हुआ पाया जाता है तो ऐसी उत्तरपुस्तिकाऐं मूल्यांकन केन्द्र अधिकारी को पृथक से सौपी जाएँ। ऐसे प्रकरणों के प्राप्तांकों की प्रविष्टि **O.M.R. SHEET** में नहीं की जाए। मूल्यांकन केन्द्र अधिकारी ऐसी उत्तरपुस्तिकाऐं पुनः मूल्यांकन के लिये परीक्षा नियंत्रक, माध्यमिक शिक्षा मण्डल, मध्यप्रदेश, भोपाल को व्यक्तिशः रूप से सौपेंगे।
2. उत्तरपुस्तिका के मुख्य पृष्ठ में अंकों एवं शब्दो में अंकित प्राप्तांकों को मिलान कर **O.M.R. SHEET** में अंकों की सटीक प्रविष्टि करें।
3. **O.M.R. SHEET** पर प्रमाणीकरण कर हस्ताक्षर करें।

कुल अंक

* उत्तर → 1 * (वस्तुनिष्ठ)

(i) चाँद का मुँह टेढ़ा है, गजानन माधव मुक्तिबोध की रचना है।

(ii) आत्मकथा लेखक स्वयं अपने जीवन की कथा स्वयं लेखक कथा, पाठकों के समक्ष प्रस्तुत करता है।

(iii) शंकराचार्य ने भाष्य (शांकर भाष्य) की रचना शहतूत वृक्ष के नीचे की थी।

(iv) 'मनुष्य प्रेम सदा बैकुंठी' कवि जायसी का मानना है।

(v) सुशीला को क्रोध होता है। मनोहर की उद्दंडता पर

उत्तर → 2 (सही विकल्प)

(i) (ग) छायावाद

(ii) (ख) बालकृष्ण भट्ट

(ii) (ख) स्पंदन

(iv) (ख) नवगीत

(v) (ख) ओ मंजिल के बहुत समीप हूँ

उत्तर→3 (सत्य-असत्य)

(i) सत्य

(ii) असत्य

(iii) सत्य

(iv) असत्य

(v) असत्य

उत्तर→4

सही जोड़ी

क्र.पृ.क्र.

B S E M P

(क)	→	(ख)
(i) बाल लीला वात्सल्य के चितेरे है	→	(घ) सूरदास
(ii) व्यंग्य की प्रधानता	→	(ग) नयी कविता
(iii) पूर्ण विचार व्यक्त करने वाला शब्द	→	(ङ.) वाक्य
(iv) प्रताप पत्र	→	(ख) फीलखाना
(v) मनोविकार का विवेचन	→	(क) भय

उत्तर - 5 (एक शब्द - एक वाक्य)

(i). राजरानी देवी

(ii) तारागण

(iii) काला रंग

(iv) देश के नौजवानों (कर्णधारो) को

क्र: पृ. उ.

B S E M P

(ग) जुगुप्सा (घृणा)

उत्तर → 6 (अथवा)

'नये मेहमान' एकांकी के आधार पर महानगरों की आवास की समस्याएं इसप्रकार हैं —

(I) आवासीय स्थान की कमी :— महानगरों में रहने के लिए जगह तथा किराये के भी मकानों की कमी है। सर्वत्र सघनता लिये हुए मकान बने हैं तथा जगह दुर्लभ है।

(II). बिजली - पानी की समस्या :— इस एकांकी के आधार पर स्पष्ट है कि महानगरों में न तो सुलभ बिजली है और न ही पानी सुलभ है तथा पानी भी पूर्णतः स्वच्छ तथा शीतल नहीं है।

(III). घुटन युक्त वातावरण :— महानगरों में सघनता तथा जनसंख्या में वृद्धि के कारण घुटन तथा अति गर्मी

BSEMP

पृष्ठ के अंकों का योग

मध्यप्रदेश

महसूस होती है सर्वत्र भीड़-भीड़ है,
जिससे खुले वातावरण का अभाव है।

(iv) सहयोग की भावना का पतन :- महानगरों में सभी अपनी-अपनी राग अलापते हैं कोई अपनी वस्तु किसी दूसरे को नहीं देता तथा एक ईर्ष्यालु व्यवहार करता है। पड़ोसी भी किसी की काम नहीं आता तथा सदैव तकलीफ देते रहते हैं।

(v) भीषण गर्मी तथा तपन :- महानगरों में मकान खुले न होकर सटे हुए हैं जिससे भीषण गर्मी होती है तथा छत पर भी तपन बनी रहती है।

(vi) पता पाने में समस्या :- इन नगरों में एक सी कई गलियाँ-मुहल्ले होने से पता पाने में समस्या आती है तथा आगंतुकों को कई तकलीफ उठानी पड़ती है।

BSEMP

पृष्ठ के अंकों का योग

उत्तर → 7

महाकाव्य तथा खण्ड काव्य अन्तर :-

महाकाव्य	खण्डकाव्य
(1) महाकाव्य में जीवन का समग्र रूप से चित्रण किया जाता है तथा उसके सभी पहलुओं पर गहनता से विचार किया जाता है।	(1) खण्डकाव्य में जीवन के किसी एक पक्ष को उद्घाटित किया जाता है तथा जीवन को छोटे रूप से प्रस्तुत किया जाता है।
(II) इसका नायक उद्दात्त एवं महान चरित्र वाला होता है तथा इसमें कथा विशेष तथा इतिहास प्रसिद्ध होती है।	(II) इसका नायक साधारण व्यक्ति, वस्तु भी हो सकता है तथा कोई भी हो सकती है।

(1) महाकाव्य → लेखक

"रामचरित मानस" गोस्वामी तुलसीदास

B S E M P

पृष्ठ के अंकों का योग

9 + =

योग पूर्व पृ० पृष्ठ 9 के अंक कुल अंक

(ii) खण्डकाव्य → लेखक

'सुदामाचरित' नरोत्तमदास

उत्तर → 8 (अथवा)

बहन को 'चिनगारी' तथा भाई को 'ज्वाला' बताकर कवि 'गोपाल सिंह नेपाली' ने बताया है कि :

(i). बहन तथा भाई राष्ट्रीय क्रान्ति की आग फूंकने मे समर्थ है तथा सम्पूर्ण राष्ट्र को एकता के सूत मे बाँधने की शक्ति है।

(ii). बहन 'ज्वाला' अर्थात राष्ट्र प्रेम तथा देश हित की प्रबलतम भावना तथा प्राण शक्ति है वही भाई भी राष्ट्रीय हित में पूर्णतः समर्पित है।

(iii). बहन की ममता तथा उसकी त्याग भावना एक माँ के समान पुकारती है तो भाई भी इस राष्ट्र का पहरेदार बनकर सदैव इसकी रक्षा करता है।

(iv) बहन और भाई दोनो मिलकर इस राष्ट्र की प्रगति तथा

पृष्ठ के अंकों का योग

समृद्धि हेतु पूर्णतः कर्तव्यबद्ध है तथा तन-मन-धन से संलग्न है।

(v) बहन 'चिनगारी' यह भावना नवीन चेतना, नवीन जागृति, नवीन सुधार लाती है तो भाई 'ज्वाला' भी इस कार्य में आगे बढ़कर सदैव इसे पूर्णता तक पहुंचाने में सदैव तत्पर है।

उत्तर → 7

महत्ता कविता में गुप्त जी ने भारतवर्ष की महत्ता का इस प्रकार बखान किया है:-

(i) प्राचीन शिक्षा का केन्द्र :- गुप्त जी ने बतलाया है कि भारत प्रारम्भ से ही प्राचीन शिक्षा का केन्द्र रहा है यहाँ पर पहले से ही देश-विदेश के लोग शिक्षा ग्रहण करने के लिए आते थे।

(ii) भारत की सहिष्णुता :- भारत शुरू से ही सहिष्णु था। इसकी शरण में जो भी आया उसे इस भारत भूमि से सर्वसम्पन्न ही

B S E M P

BSEMP

बनाया तथा सदैव सहयोगी प्रवृत्ति की ओर अग्रसर हुआ है

(iii) पुनर्निर्माण की महत्ता :- महाभारत जैसे विध्वंस के पश्चात भी भारत ने पुनर्जीवित होकर अपने वैभव को बनाये रखा तथा अन्य देशों के लिए भी सदैव से ही सहयोगी प्रवृत्ति दर्शायी।

(iv) निरन्तर विकासशील :- भारत राष्ट्र अभी भी निरन्तर विकास के पथ पर अग्रसर है तथा नये-नये आयाम स्थापित कर रहा है।

(v) विश्व में विजय पताका :- भारत की विजय पताका के लहराने से विश्व के बड़े से बड़े राष्ट्र भी डरते हैं तथा भारतीयों की महत्ता के आगे ईर्ष्या प्रकट करते हैं।

(vi) वसुधैव कुटुम्ब प्रवृत्ति :- भारतीय संस्कृति सदैव सबसे मिलकर अपनी पृथ्वी पर समाज रूपी मानवता स्थापित करना जानती है।

पृष्ठ के अंकों का योग

उत्तर → 10

* निबंध :- आचार्य रामचन्द्र शुक्ल के अनुसार :-

" यदि गद्य लेखको की कसौटी है, तो निबंध गद्य की कसौटी है। "

अर्थात् गद्य लेखन मे लेखक की सम्पूर्ण विशेषता उजागर होती है तथा गद्य की विधा निबंध मे उस गद्य की सम्पूर्ण विशेषता उजागर होती है। इसप्रकार निबंध के माध्यम से लेखक की विशेषता का सहज ही अनुमान लगाया जा सकता है।

* हिन्दी निबंध साहित्य को निम्न प्रकार से वर्गीकृत किया गया है :-

(i) भारतेन्दु युग

(ii) द्विवेदी युग

(iii) शुक्ल युग

(iv) शुक्लोत्तर युग

B S E M P

पृष्ठ के अंकों का योग

द

इसके अतिरिक्त निबंध की शैली की दृष्टि से निबंध के निम्न भाग है:-

(i) वर्णनात्मक निबंध
(ii) विवरणात्मक निबंध
(iii) भावात्मक निबंध
(iv) विश्लेषणात्मक निबंध

उत्तर 7 II

"आह मेरा गोपालक देश" महादेवी जी ने निःश्वास छोड़ते हुए यह कथन इसलिए कहा क्योंकि :-

(i) गाय भारत की माता है इसकी इस देश मे पूजा की जाती है। ऐसे मे यदि किसी गाय की असमय ही मृत्यु हो जाये तो, हमारी भावनाये छिन्न-भिन्न हो जाती है।

(ii) कुछ लोग चन्द निजी स्वार्थो के लिए करुणामयी इस गाय की निर्मम हत्या करते है, जिससे इस धरा को कलंकित होना पड़ता है, ऐसे मे हमारे हृदय क्रन्दन करने लगता है।

(iii) इस गोपालक राष्ट्र मे

B S E M P

पृष्ठ के अंकों का योग

इस करुणारूपी गाय को बड़े ही स्नेह तथा आदर से देखा जाता है, ऐसे मे यदि उसे तड़पाया जाये तथा उसके साथ छल-कपट किया जाये तो हमारी अन्तरात्मा से यह आवाज अवश्य ही आने लगती है।

(iv) गौरा को ग्वाले के स्वार्थ के कारण निर्मम पीड़ा सहनी पड़ी जिससे उसका वत्स भी अनाथ हो गया तथा एक गाय की अन्तरात्मा को ठेस पहुँची। इसलिए महादेवी जी ने मोचनीय देश की दुरावस्था पर व्यथा प्रकट की है।

(v) गौरा रूपी गाय जो एक चंचल, सुन्दर तथा करुणारूपी थी, उसका कोई नही था तथा वह देवी जी अति प्रिय तथा स्नेहील भी थी। परन्तु जब ग्वाल इसे मृत्यु की शैया पर सुलाता है तो उनको भावनाएँ रोने लगती है तथा वे अपने जीवन मे सबसे ज्यादा व्यथा भोगती है तथा मानो उनके ऊपर दुख का सागर ही उमड़ पड़ा हो।

अतः यह कथन महादेवी जी ने दुःख से पीड़ित होकर कहा

BSEMP

BSEMP

उत्तर → 18

काव्य गुण :- साहित्य मे काव्य गुण मुख्यतः तीन प्रकार के माने गये है :-

(i) माधुर्य गुण

(ii) ओज गुण

(iii) प्रसाद गुण

* ओज गुण :- काव्य के जिस गुण विशेष के कारण सहृदय का चित्त उत्तेजित हो जाये अर्थात् उसके मन मे उत्तेजना, उत्साह, शौर्य आदि भर जाये, उसे ओज गुण कहते है।

(i) यह गुण विशेषतः वीर रस के साथ पाया जाता है।

(ii) इसमे प्रायः कठोर शब्दावली प्रयुक्त की जाती है।

(iii) इसकी भाषा प्रवाहयुक्त तथा भावुकता से परिपूर्ण होती है।

पृष्ठ के अंकों का योग

कृ.पृ.उ.

उदाहरण :→
"बुन्देले हरबोलो के मुख हमने
सुनी कहानी थी।
बूढ़े भारत मे आयी फिर से
नई जवानी थी।
खूब लड़ी मर्दानी वह तो
झाँसी वाली रानी थी।"

उत्तर 13

(अ) विभाषा :— विभाषा भाषा का वह
लघु रूप है तथा बोली
का विस्तृत रूप है, जो किन्ही
कारणों से एक क्षेत्र विशेष मे
मुख्यतः उपयोग की जाती है।
विभाषा का क्षेत्र विशेष एक बड़ा
क्षेत्र होता है तथा वहाँ पर विभाषा
मूल रूप से उपयोग मे लायी
जाती है।
जैसे :— अवधी, ब्रजभाषा।

विशेषताएँ :— (1) विभाषा में साहित्य
रचना की जा सकती है तथा

BSEMP

पृष्ठ के अंकों का योग

इसका भाषा की अपेक्षा कम विस्तृत होता है।

(ii) विभाषा का क्षेत्र भाषा की अपेक्षा कम होता है तथा बोली से अधिक होता है।

(ख) वाक्य परिवर्तन :-

(i). क्या सत्य की सदा जीत होती है?

(ii) यह काम मत कीजिए।

*उत्तर→14 कवि परिचय

"मैथिलीशरण गुप्त"

(क) दो रचनाएँ :-

(i) साकेत

(ii) पंचवटी

(ख) भावपक्ष :-

मैथिलीशरण गुप्त जी सामान्यतः एक राष्ट्रवादी कवि थे। इनकी कविताओं का भाव पक्ष इस प्रकार

B S E M P

पृष्ठ के अंकों का योग

है:-

(i) राष्ट्रवादी स्वर :- इनके काव्य के विषय प्रायः राष्ट्रीय भावनाओं से ओत प्रोत थे। सर्वत्र राष्ट्रीय प्रेम ही उमड़ता था। इन्होंने लिखा है:-

"मुझे तोड़ लेना वनमाली,
उस पथ पर तुम देना फेंक।
जिस पथ पर मातृभूमि को
शीश चढ़ाने जाये वीर अनेक॥

(ii) सामाजिक उत्थान :- गुप्त जी हमेशा से ही सामाजिक कुरीतियों दूर करके समाज के उत्थान के लिए प्रयास रत रहे।

(iii) नारी सम्मान की भावना :- इनके काव्य में सदैव से ही नारी के प्रति सहानुभूति तथा सम्मान की भावना रही।

(iv) श्रमवाद की प्रधानता :- इन्होंने अपने काव्य में मेहनत की महिमा का बखान किया है तथा सदैव ही राष्ट्र उन्नति के लिए युवाओं का आह्वान किया है।

BSEMP

पृष्ठ के अंकों का योग

(v) प्रकृति चित्रण :- इनका प्रकृति चित्रण भी अनुपम था। प्रकृति की समस्त क्रियाकलापों का सुखद वर्णन है।
"चारु चन्द्र की चंचल किरणें,
खेल रही हैं, जल-थल में।"

* कलापक्ष :- इनके काव्य में कलापक्ष भी पूर्णतः ससक्षम तथा प्रौढ़ता लिये हुए था। इसकी विशेषताएं इस प्रकार हैं।

(i) भाषा :- काव्य की भाषा सरल, सुबोध तथा प्रवाहमयी है। इनकी भाषा खड़ी बोली हिन्दी रही।

(ii) शैली :- विभिन्न शैलियों जैसे वर्णनात्मक, गवन्यात्मक, आदि का प्रयोग है।

(iii) रस :- इनके काव्य में वीर, करुण, तथा रौद्र रस मुखर होता है।

(iv) छन्द :- इन्होंने प्रायः मुक्तक छन्द शैली को अपनाया है।

(v) अलंकार :- उपमा, अनुप्रास तथा उत्प्रेक्षा इनके प्रिय अलंकार रहे हैं।

BSEMP

पृष्ठ के अंकों का योग

(ग) साहित्य में स्थान :-

(i) मैथिलीशरण गुप्त जी प्रायः हिन्दी साहित्य जगत के एक प्रमुख कवि माने जाते हैं।

(ii) हिन्दी साहित्य मे आप "राष्ट्रकवि" के नाम से प्रचलित है

(iii) भारत सरकार द्वारा विभिन्न अकादमी पुरस्कार से आप सम्मानित हैं तथा 'साकेत' नामक महाकाव्य पर अलंकृत भी हैं।

BSEMP

उत्तर → 15 (लेखक परिचय)

"डॉ. रघुवीर सिंह"

(क) दो रचनाएँ :-

(i) मालवा में युगान्तर

(ii) शेष स्मृतियाँ

(ख) भाषा :-

(i) डॉ. रघुवीर सिंह की रचनाओं की भाषा सहज सरल सहज साहित्यिक तथा प्रवाहमयी है।

योग पूर्व पृष्ठ + पृष्ठ 21 के अंक = कुल अंक

मध्यप्रदेश

(ii) गूढ़ विषयों मे भी भाषा मुख्यतः प्रांजलता तथा माधुर्यता लिये हुए है

(iii) शब्दो का चयन उचित है। देशज तथा तत्सम शब्दो के साथ उर्दू, और फारसी शब्दों की छुटा देखने को मिलती है।

(iv) रचना मे मुहावरो तथा लोकोक्तियों के प्रयोग से भाषा मे नई सजीवता तथा प्रभावोत्पादकता आ गई है।

(v) इन्होने प्रायः अभिधा तथा व्यंजना शब्द शक्ति को विशेष महत्व दिया है।

(vi) रचनाओं को अधिक प्रभावी बनाने के लिए सहज तथा शीतलता लिये हुए वाक्यो का प्रयोग किया गया।

* ~~भाषा~~ शैली :- डॉ. रघुवीर सिंह ने अपनी विभिन्न प्रकार की रचनाओं के लिए विभिन्न शैलियों का प्रयोग किया है।

(i) वर्णात्मक शैली :- वर्णन प्रधान तथा ऐतिहासिक रचनाओं के

BSEMP

पृष्ठ के अंकों का योग

लिए इस शैली का प्रयोग किया है।
(ii) विश्लेषणात्मक शैली :-
विश्लेषण प्रधान
तथा गूढ़ विषयो हेतु यह शैली प्रयुक्त की।
(iii) विवरणात्मक शैली :-
विवरण प्रधान तथा
विस्तृत रचनाओ के लिए यह शैली प्रयुक्त
की है।
(iv) गवेषणात्मक शैली :- यह शैली भी प्रायः
इनकी गद्यकाव्य
रचनाओ मे पाई जाती है।
(v) व्याख्यात्मक शैली :- इतिहास प्रधान
रचनाओ में यह
शैली विशेष रूप से प्रयुक्त है।

* साहित्य मे स्थान :-
(i) डॉ. रघुवीर सिंह
हिन्दी साहित्य में प्रायः ऐतिहासिक लेखक
के रूप मे विख्यात है।
(ii) आपका गद्यकाव्य
दुर्लभ है तथा आप हिन्दी साहित्य मे
अपना विशेष स्थान रखते है।
(iii) साहित्य अकादमी
से अलंकृत तथा सुशोभित है।

पृष्ठ के अंकों का योग

उत्तर → 16 "गद्यांश"

हे प्रभु! - - - - - - - - - - - - - - - लिए जीऊँगा।

(i) सन्दर्भ :- प्रस्तुत गद्यांश हमारी पाठ्य पुस्तक 'भारती' के पाठ - "तात्या टोपे" नामक एकांकी से अवतरित है।
इसके लेखक "डॉ. सुरेश शुक्ल 'चन्द्र'" जी है।

(ii) प्रसंग :- प्रस्तुत गद्यांश में तात्या टोपे की अन्तरात्मा की आवाज की सहज वर्णन है जो अपने लिए बलि पर चढ़े वीर के बलिदान का अंग्रेजो से बदला लेने के लिए उत्सुक है।
तात्या टोपे की राष्ट्रभक्ति तथा कर्तव्य परायणता का सजीव वर्णन है।

(iii) व्याख्या :-
तात्या टोपे कहते है कि →
"मुझे हे मातृभूमि, हे ईश्वर! शक्ति दो सामर्थ्य दो ताकि मैं अपने लिए बलिदानी वीर का खून का हिसाब बराबर कर सकूँ।
(क्र.पृ.उ.)

BSEMP

पृष्ठ के अंकों का योग

मैं प्रण करता हूँ कि जब तक मैं अपने लक्ष्य तक नहीं पहुँच जाता इसी तरह सन्यासी वीर पुरुष के वेश मे ही रहूँगा तथा दुखों को सामना करते हुए इस पवित्र कार्य को करूँगा।

अब से मैं तात्या टोपे इस मातृभूमि के लिए, इसके सम्मान के लिए जीऊँगा।"

* विशेष :- (i) भारत की स्वतंत्रता संग्राम की घड़ी का मार्मिक चित्रण है।

(ii) ~~भारतीय~~ भारतीय वीरो की देशभक्ति तथा कर्तव्य परायणता का सहज चित्रण किया गया है।

(iii) तात्या टोपे की बलिदानी तथा राष्ट्रप्रेम की भावना प्रकट है।

(iv) भाषा सरल, सहज, तथा पात्रानुकूल है।

(v) शब्द चयन विशेष है तथा एकांकी को परमउत्कर्षता तक पहुँचाने वाले हैं।

B S E M P

पृष्ठ के अंकों का योग

B S E M P

उत्तर → 17 (पद्यांश)

बानी .... नई-नई।

(i) सन्दर्भ :- प्रस्तुत पद्यांश हमारी पाठ्य पुस्तक के 'भक्ति काव्य' भाग के अन्तर्गत "वन्दना" नामक पाठ से अवतरित है। इसके रचयिता 'केशवदास' जी हैं।

(ii) प्रसंग :- प्रस्तुत पद्य खण्ड में कवि ने "माँ सरस्वती" के गुणों का बखान किया है तथा उनके गुण, क्रियकलाप, उदारता का वर्णन किया है।

(iii) व्याख्या :- माँ सरस्वती की उदारता तथा गुणों का वर्णन करते हुए केशवदास जी कहते हैं —

"जगतमाता, वाणी की देवी, माँ सरस्वती की उदारता का बखान करने वाला इस जग में कोई है ही नहीं। समस्त देवगण, तटबिगण, सिद्धगण, तपोधारी सभी ने बखान किया परन्तु सभी इसमें असफल रहे।

कृ.पृ.उ.

पृष्ठ के अंकों का योग

मध्यप्रदेश

भूतकाल, वर्तमान, तथा भविष्य सभी इनकी महिमा का बखान करते है। परन्तु कोई भी पूर्णतः व्याख्या नही कर सकता है।

माँ सरस्वती के पति अर्थात चतुर्मुख ब्रह्मा जी, पुत्र अर्थात पंचमुख शिवशंकर, नाती अर्थात षटमुख धारी कार्तिकेय सभी ने इसका बखान किया परन्तु सभी की व्याख्या मे कुछ कुछ नया ही आया है। ॥

*विशेष :- (i) भाषा प्रांजल तथा प्रवाहमयता एवं बोधगम्य है।

(ii) माँ सरस्वती की महिमा को अवर्णनीय बताया है।

(iii) अनुप्रास, उपमा अलंकार की घटा बिखेरी गयी है।

(iv) माधुर्य ~~तथा~~ तथा प्रसाद गुण युक्त है।

(v) सरस्वती जी के पति, पुत्र, नाती का भी बखान किया गया है।

BSEMP

पृष्ठ के अंकों का योग

BSEMP

उत्तर > 18 पत्र

143, कृष्णा कुंज
कालोनी, (कटनी)
12.3.2009

प्रिय अनुज,

सस्नेह आशीर्वाद।

मुझे कल ही माता-पिता का पत्र प्राप्त हुआ। मैं यहाँ पर सकुशल तथा स्वस्थ हूँ तथा आशा करता हूँ कि आप लोग भी सकुशल तथा स्वस्थ होंगे।

माता पिता जी ने मुझे अवगत कराया कि तुम्हारी वार्षिक परीक्षा को समाप्त हुए पाँच दिन हो गये हैं। अतः अब तुम अपनी गर्मियों की छुट्टियाँ मौजमस्ती से बिताना चाहोगे। तुम्हारे इस कार्यकाल में घर पर ही तुमने अपने लिए दूरदर्शन देखने का भी निश्चय किया होगा।

मैं तुम्हें यह बताना चाहूँगा कि दूरदर्शन जहाँ अच्छी है, वहीं इसके कई घातक परिणाम भी हैं। इससे आँखों तथा मस्तिष्क

योग पूर्व पृष्ठ + पृष्ठ 28 के अंक = कुल अंक

पर बुरा प्रभाव पड़ता है। लगातार दूरदर्शन देखने से स्वास्थ्य तथा मानसिक स्थितियों पर भी बुरा प्रभाव पड़ता है।

अतः तुमसे यही अनुरोध है कि दूरदर्शन के अधिक प्रयोग से बचो तथा इसके स्थान पर खेलों का उपयोग करो।

माता-पिता को सादर चरण स्पर्श तथा छोटी बहन को प्यार।

तुम्हारे पत्र की प्रतीक्षा मे

तुम्हारा शुभेच्छु

तुम्हारा भाई →

दिनांक →

3.2.2003

स्थान →

क.ख.ग.

उत्तर → 17

(क) शीर्षक → संस्कारित शिक्षा का महत्व।

(ख) शिक्षा संस्कार दायिनी है तथा इंसान की निर्माता है। अंग्रेजों के शासन मे

B S E M P

(29) [ ] + [1] = [ ]
योग पूर्व पृ. | पृष्ठ 29 के अंक | कुल योग

मध्यप्रदेश

शिक्षा पद्धति को बदलकर शासन किया गया। आज शिक्षा एकांकी, नौकरीपेशा, अव्यवहारिक, आश्रित है।

प्राचीन शिक्षा अध्यात्म, व्यवहार, जीवन्त परक थी।

अतः जीवन के लिए इसे सही दिशा, सही विचारधारा आवश्यक है। यह दोष समाप्त होना चाहिए अन्यथा यह समाज के लिए घातक है।

(ii) अंग्रेजी शिक्षा का प्रमुख उद्देश्य हमारी एकता भंग करके, शासन करना तथा हमें भिन्न-भिन्न करना है।

उत्तर → 20 (निबंध)

(ii) "राष्ट्रीय एकता"

"एकता में ही शक्ति है
एकता में ही भक्ति है।
यही समृद्धि, सुख, सम्पत्ति है।"

कृ.पृ.उ.

BSEMP

पृ. ... का योग

BSEMP

* रूपरेखा :- (i) प्रस्तावना
(ii) राष्ट्रीय एकता
(iii) एकता के पोषक तत्व
(iv) एकता के लिए घातक तत्व
(v) जातिवाद तथा भाषावाद
(vi) राजनैतिक स्वार्थ
(vii) बाह्य शक्तियों तथा कट्टरवाद
(viii) हमारा कर्तव्य
(ix) एकता के लाभ
(x) उपसंहार

(i) प्रस्तावना :- भारत एक धर्म निरपेक्ष राष्ट्र है। यहाँ पर समस्त जाति, धर्म, सम्प्रदाय, बोली, भाषा, वेशभूषा तथा रहन-सहन वाले लोग निवास करते हैं।

यह पृथ्वी स्वयं एक एकता का द्योतक है। पृथ्वी एकमात्र अकेला ग्रह है जिस पर जीवन सम्भव है तथा यह सभी प्राणियों को एक साथ एक सूत्र मे बाँधकर रखती है। तथा हमेशा से ही एक माता की तरह पालती रही है।

"एक से भले दो, दो से भले चार ।।
सबसे ही बनता है, सुखद संसार ।।

पृष्ठ के अंकों का योग

योग पूर्व पृष्ठ + पृष्ठ 31 के अंक = कुल अंक

(ii) राष्ट्रीय एकता :- एक होना ही एकता है। सम्पूर्ण राष्ट्र के निवासी एक ही छत्रछाया के नीचे, एक ही शासन के नीचे तथा एक ही राष्ट्र में पले-बढ़े होते हैं। यही राष्ट्रीय एकता है। राष्ट्रीय एकता से तात्पर्य है - समस्त राष्ट्र का एकजुट होना तथा एक ही विचारधारा का होना।

एक ही संस्कृति स्रोत तथा एक ही भावना ही राष्ट्रीय एकता है। "मेरा राष्ट्र एक रहे, हरदम नेक रहे। भविष्य में भी हम सब एक रहे।"

(iii) एकता के पोषक तत्व :-

राष्ट्रीय एकता के के लिए कई पोषक तत्व की भाँति ही कार्य करते हैं।

(i) राष्ट्रीय ध्वज
(ii) राष्ट्रीय गीत-गान
(iii) राष्ट्रीय स्मारक
(iv) राष्ट्रीय नेता
(v) राष्ट्रीय पशु-पक्षी
(vi) राष्ट्रीय सम्प्रभुता
(vii) राष्ट्रीय शासन प्रणाली

क्र.पृ.3०.

BSEMP

पृष्ठ के अंकों का योग

"एकता ही अमृत, जल, और जीवन है।
कण-कण मे ही एकता के प्राण है।"

(ख) राष्ट्रीय एकता के लिए घातक तत्व :-

इसके लिए कई तत्व घातक है जैसे :-

(i) जातिवाद की भावना
(ii) प्रान्तवाद की भावना
(iii) क्षेत्रवाद की भावना
(iv) धार्मिक कट्टरता
(v) भाषावाद की भावना
(vi) राजनितिक स्वार्थ
(vii) बाह्य विदेशी ताकते
(viii) परस्पर लड़ाई झगड़े
(ix) आपसी कट्टरपंथी इत्यादि।

(ग) जातिवाद तथा भाषावाद :- जाति के लिए लड़ाई झगड़े तथा भाषा से सम्बंधित वाद विवाद राष्ट्रीय एकता को छिन्न-भिन्न करते है तथा हमारी सम्प्रभुता को नष्ट करते है। जातियो तथा भाषा के आधार पर देश को बाटकर हमारी एकता नष्ट की जाती है।

पृष्ठ के अंकों का योग

पूरक उ.पु. 4 पृष्ठ

माध्यमिक शिक्षा मण्डल, मध्यप्रदेश, भोपाल

1. केन्द्र की सील 681009

परीक्षक के लिये

2. पर्यवेक्षक के हस्ताक्षर व दिनांक 12/3/09

3. केन्द्राध्यक्ष के हस्ताक्षर की सील

4. केन्द्र क्रमांक

6. परीक्षा का नाम

7. विषय हिन्दी 8. माध्यम हिन्दी

8. दिनांक 12.3.09

पृष्ठ

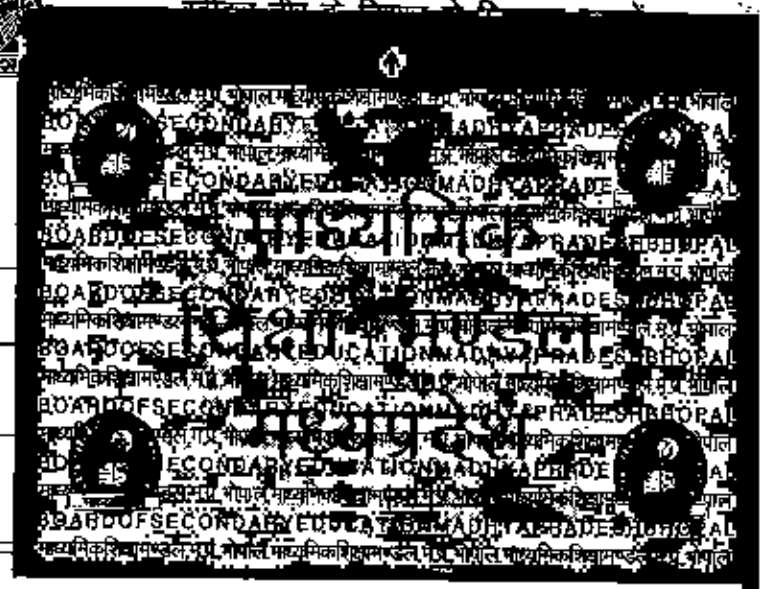

B S E M P

(vi) राजनितिक स्वार्थ :- विभिन्न राजनितिक दल अपने स्वार्थ के लिए राष्ट्र को टुकड़े-टुकड़े मे बाँटकर अपना पेट भरते है। जिससे हमारी एकता को धक्का लगता है। राजनितिक दल अपने लिए लोगो मे मतभेद पैदा करके तथा उन्हे आपस मे लड़ाकर देश की एकता को छिन्न-भिन्न करते है।

(vii) बाह्य शक्तियाँ तथा कट्टरवाद :- कई विदेशी देश तथा कट्टरपंथी सम्प्रदाय अपने लिए देश की एकता को तोड़ते है तथा अपने लिए देश मे विभेद पैदा

पृष्ठ के अंकों का योग

(2)

पृष्ठ 2 के अंक   कुल अंक

करते है। इसके एकता-मेल होती है।

(viii) हमारा कर्तव्य :- अतः हमारा कर्तव्य है कि हम अपनी इस एकता को सदैव बनाये रखे तथा बाहरी व इसके लिए घातक शक्तियों को मुँह तोड़ जवाब दे तथा अपनी एकता हर कीमत पर बनाकर रखे।
"एक मे ही राम है, एक मे ही आराम है।
जो एक नही है, वो हरदम परेशान है।

(ix) एकता के लाभ :- एकता के कारण हमारा राष्ट्र उन्नति करता है, विकास करता है, शांति बनी रहती है तथा हर क्षेत्र मे राष्ट्र की प्रगति होती है। एकता से ही राष्ट्र की सत्ता अक्षुण्ण बनी रहती है।
एकता बनाना ईश्वर ने भी सिखाया।
उसने ही तो सबको एक जैसा बनाया।।

(x) उपसंहार :- अतः राष्ट्रीय एकता हमारे प्राण समान है तथा हमे हमेशा सुख शांति जीवन देने वाली है। एकता मे ही शक्ति है, एकता मे ही प्रगति सम्भव है।

B S E M P

(3)

“जीवन की हर घड़ी पर कोई काम

हर अकेला व्यक्ति पछताता है, पछताता

B S E M P

4

योग पृष्ठ ... + ... के अंक = कुल अंक

मध्यप्रदेश

B
S
E
M
P

पृष्ठ के अंकों का योग